इकाई 3 भारत में दलीय प्रणाली*

इकाई की रूपरेखा

3.0 उद्देश्य

3.1 प्रस्तावना

3.2 दलीय प्रणाली के प्रकार

- 3.2.1 एक-दलीय प्रणाली
- 3.2.2 द्वि-दलीय प्रणाली
- 3.2.3 बहु-दलीय प्रणाली

3.3 भारत में दलीय प्रणाली के विभिन्न चरण

- 3.3.1 कांग्रेस का प्रभुत्व युग (एक दलीय बनाम बहुदलीय)
- 3.3.2 कांग्रेस प्रणाली का पतन और गैर कांग्रेसी दलों का उदय (1967-1989)
- 3.3.3 गठबंधन/दलीय प्रणाली का उदय

3.4 भारतीय दलीय प्रणाली की सीमाऐं

3.5 सारांश

3.6 संदर्भ

3.7 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

3.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात आप कर सकेगें :

- एक दलीय, द्वि-दलीय और बहु-दलीय प्रणाली में अन्तर;
- भारत में दलीय प्रणाली के विभिन्न चरणों का विश्लेषण; और
- भारत में दलीय प्रणाली की सीमाओं की व्याख्या।

3.1 प्रस्तावना

जैसा कि आपने पहली इकाई में पढ़ा है राजनीतिक दल एक राजनीतिक प्रणाली की महत्वपूर्ण विशेषताएँ हैं। लोकतांत्रिक राजनीतिक व्यवस्था में लोकतंत्र को मजबूत बनाने के लिये ये महत्वपूर्ण उपकरण है। उनकी विशेषताओं में संगठन, नेतृत्व विचारधारा नीतियों और कार्यक्रमों, समर्थन के आधार और तरीका शामिल है। राजनैतिक व्यवस्था यह बताती है कि राजनीतिक व्यवस्था में राजनीतिक दलों की संख्या कितनी है, और प्रकृति के गठबंधन में राजनीतिक दल चुनाव से पहले या बाद में गठन करते हैं और सरकार बनाते हैं। आपने इकाई 2 में भी पढ़ा है। भारत में राजनीतिक दलों और उनके प्रकार के बारे में। इस इकाई को यह बताया जाएगा कि भारत में राजनीतिक दलों की राजनीतिक व्यवस्था के अनुसार किस प्रकार समूह दलों की राजनीतिक व्यवस्था के अनुसार किस प्रकार समूहबद्ध किया जा सकता है। भारत की तत्कालीन पार्टी पद्वति का विकास मूलरूप से स्वतंत्रता संघर्ष के संदर्भ में हुआ था। आजादी के बाद राजनीतिक दलों का उद्देश्य बदल गया। स्वतंत्रता से पहले राजनीतिक दल राष्ट्रीय आंदोलन का हिस्सा थे जिसका मुख्य

*डॉ. दिव्या रानी, कंसलटेंट, राजनीति संकाय, इग्नू, नई दिल्ली

उद्देश्य स्वतंत्रता प्राप्ति करना था। स्वतंत्रता के पश्चात उनका उद्देश्य सत्ता प्राप्ति और उन्मुखी निर्माण के लिए स्थानांतरि हो गया। इस काम के लिए उन्होंने प्रति स्पर्धा की। परिणाममतः भारत में राजनीतिक व्यवस्था में एक दलीय प्रभुत्व से लेकर कई दलों के प्रादुर्भाव तक बदलाव आया। हालांकि ए.आई.एच. भारत की एक बहुदलीय प्रणाली है आजादी के पहले दो दशकों में पार्टी व्यवस्था कई चरणों से गुजरी है। देश में एक दलीय व्यवस्था बनाम बहुदलीय व्यवस्था है। बहुदलीय व्यवस्था व गठबंधन सरकार की अवधारणा 1989 के बाद प्रसिद्ध हुई थी और अब भी यह भारत की राजनीतिक प्रणाली में प्रचलित है। भारत में राजनीतिक दल और पार्टी प्रणाली (दलीय व्यवस्था) सांस्कृतिक विविधता, सामाजिक, जातीय, जाति समुदाय और धार्मिक बहुलवाद से अत्यधिक प्रभावित हुए है। राष्ट्रवादी आंदोलन की परंपराए, पार्टी नेतृत्व की विरोधाभासी शैली और वैचारिक दृष्टिकोण का सामना करना भारतीय संविधान ने केन्द्र और राज्य दोनों में सरकार का संसदीय स्वरूप स्थापित किया है। लोकसभा और विधानसभाओं के सदस्यों का चुनाव देश के नागरिकों द्वारा किया जाता है इसलिए चुनाव लड़ने वाली राजनीतिक पार्टियां देश की राजनैतिक प्रणाली का हिस्सा बन जाती हैं। दलीय प्रणाली लोकतंत्र का आधार है और यह जनता और सरकार के बीच एक कड़ी है।

3.2 दलीय प्रणाली के प्रकार

मुख्य रूप से दलीय प्रणाली की तीन श्रेणियां है :

3.2.1 एक दलीय प्रणाली

एक दलीय प्रणाली पर केवल एक पार्टी (दल) का शासन होता है इसका कोई विरोध नहीं होता है। इस सत्तावादी सिद्धान्त को पहले राजतंत्रों और बाद में एक तानाशाही के रूप में पाया गया और अब ये व्यवस्था कुछ जन तांत्रिक देशों में मौजूद है। फिर भी ऐसे शासनों में भी चुनाव कराए जाते है। यदि दर्शकों के सामने लोकप्रिय समर्थन के रूप में शासन को पेश किया जाए मतदाता चयन केवल एक उम्मीदवार के लिए सीमित होता है एक दलीय प्रणाली का अत्यावश्यक कार्य राजनीति के बड़े निर्गम पर गन संपन्न मतदाताओं के फैसले लेने लिए नहीं बल्कि अनुशासन और अनुशासन को सुनिश्चित करने के लिए है। लोगों के बीच आज्ञाकारिता प्रणाली को औपचारिकता प्रदान करती है। और उस प्रकार लोकतांत्रिक अधिकारी को कम करती है क्योंकि सत्ता औपनिवेशिक देशों या अन्य राज्यों के मामलों में होती है। इस प्रणाली में भाषा और अभिव्यक्ति, प्रेस और संघों की स्वतंत्रता को समाप्त करना शामिल है। इस प्रकार की दलीय व्यवस्था जनता के लोकतंत्र और अधिकारों का समर्थक नहीं है। इस प्रणाली में कहीं कोई विरोध न तो पार्टी के और न ही सरकार के खिलाफ आवाज उठाने का प्रावधान होता है। चीन में एक दलीय व्यवस्था है।

3.2.2 द्वि-दलीय प्रणाली

द्वि-दलीय प्रणाली वह प्रणाली है जिसमें अन्य दलों की मौजूदगी के बावजूद सिर्फ दो ही पक्ष मतदाताओं का सबसे अधिक समर्थन प्राप्त करते हैं इनमें से एक सत्ताधारी तथा दूसरी विरोधी पार्टी होती है। यह इस पर निर्भर करता है कि चुनाव में किस पार्टी को बहुमत मिलता है। संयुक्त राज्य अमेरिका और यूनाइटेड किगडम दो दलीय प्रणाली के अच्छे उदाहरण है। अमेरिका में डैमाकेटिक और रिपब्लिकन पार्टीया प्रमुख दलें हैं और ब्रिटेन में लेबर और कंजरवेटिव पार्टी मुख्य दल हैं।

3.2.3 बहु-दलीय प्रणाली

बहु-दलीय प्रणाली यह एक ऐसी प्रणाली है जिसमें दो से अधिक दल मौजूद है जो सत्ता के लिए एक दूसरे के साथ संघर्ष करते है। भारत और कई यूरोपीय देशों के पास एक बहुआयामी प्रणाली ही बहु-दलीय प्रणाली में तीन, चार या इससे अधिक दल गठबंधन सरकार बनाने और शासन के लिए न्यूनतम साझा कार्यक्रम अपनाने के लिए एकजुट होते है। बहुदलीय प्रणाली दो प्रकार की हैः अस्थिर और स्थिर काम कर रहे भारत में 1996-1998 के दौरान इस प्रणाली की तरह बर्ताव करती है। और इस प्रकार सरकार को स्थिरता प्रदान करती है। हालांकि उनमें दो से अधिक राजनैतिक दल हैं। बहुदलीय प्रणाली गठबंधन सरकार को बढ़ावा देती है और 1990 के दशक से भारत में गठबंधन सरकार रही हैं। इस प्रणाली की कमी यह है कि मंत्रीपरिषद के सदस्य अपने दल के अध्यक्षों के नेतृत्व में कार्य करने के बजाय ब्लैकमेल (भयादोहन) या सरकार में फेर बदल करने के लिए प्रयास करते है। सरकार की अस्थिरता इस प्रकार की पार्टी पद्वति में एक समस्या थी।

अभ्यास प्रश्न 1

नोटः क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए

ख) अपने उत्तर का मिलान इकाई के अंत में दिए गए उत्तर से करें।

1) द्वि-दलीय और बहु-दलीय प्रणाली में क्या अंतर है?

.....

.....

.....

.....

.....

3.3 भारत में दलीय प्रणाली के विभिन्न चरण

भारत में दलीय प्रणाली ने एक ही पार्टी कांग्रेस के प्रभुत्व से लेकर कई पार्टियो के गुणन में विभिन्न चरणों में दिखाई दिया है। इस इकाई में हम पार्टी के विभिन्न चरणों के बारे में चर्चा करेंगे।

3.3.1 कांग्रेस का प्रभुत्व युग (एक दलीय और बहु-दलीय)

आप पढ़ चुके है कि स्वाधीनता से पहले विभिन्न राजनीतिक दलों का जन्म हुआ थ आजादी के बाद, जनता पार्टी शासन (1977-80) के एक संक्षिप्त अवधि में अलावा यह भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (आई.एन.सी.) बीसवीं शताब्दी से पहले सबसे अधिक लोकप्रिय अखिल भारतीय स्तर की पार्टी रही। रजनी कोठारी के अनुसार पार्टी के वर्चस्व की अवधारणा ने 1950 के दशक और 1960 के दशक में एक दलीय प्रणाली की अपेक्षा भारत की दलीय प्रणाली की व्याख्या अधिक सही ढंग से की। वास्तव में उन्होंने कांग्रेस पार्टी को ''कांग्रेस व्यवस्था'' के प्रमुख दल के रूप में बताया। कांग्रेस ने पहले चार आम चुनावों में संसद को पूर्ण बहुमत प्राप्त कर लिया था। कांग्रेस पार्टी ने इस स्थान को 1967 तक हासिल किया। कांग्रेस में इतनी प्रबल ताकत थी कि उसने 1952, 1957 और 1962 में लोकसभा और राज्य विधान सभाओं के प्रायः सभी चुनावों में बहुमत प्राप्त कर लिया। हालांकि उसने लोकसभा

चुनावों में 48 प्रतिशत से अधिक मत प्राप्त नहीं किया था (1957 में सबसे अधिक 47.78 प्रतिशत) परन्तु 1952 में 364 सीटों को बहुमत प्राप्त हो गया। 1962 से सन् 1957 में 371 और 361 मत)। कुछ को छोड़कर राज्य विधानसभाओं में लगभग सभी विधानसभा चुनावों में कांग्रेस का वर्चस्व था। इस प्रणाली में तीन यानि बहुदलीय प्रणाली से देश की एक प्रमुख पार्टी बन गई थी। इस चरण की मुख्य विशेषता थी - बहु दलीय बनाम एक दलीय व्यवस्था। चौथे आम चुनाव के बाद नेहरू के निधन के बाद पार्टी के विभाजन का प्रभाव कांग्रेस पर पड़ा। हालांकि कांग्रेस केन्द्र में एक प्रमुख दल था और अधिकांश राज्यों में वह कई राज्यों में गैर कांग्रेसी दलों की प्रतिस्पर्धा का सामना कर रही थी इसके अनेक उदाहरण है। इसका सबसे बड़ा विरोधी दल केरल में भारतीय कम्यूनिस्ट दल रहा। 1960 के दशक में समाजवादी दल, बी.के.डी./बी.एल.डी/एल.डी/वाम दलों जन संघ, रिपब्लिकन, पार्टी डी. के और विभिन्न राज्यों में कई अन्य दलों ने एक ही दल प्रणाली के रूप में कांग्रेस पर दबदबा बनाने की चुनौती दी। उन्होंने लोगों को सामाजिक स्तर पर जुटाया। आर्थिक और सामाजिक मुद्दों इसके परिणामस्वरूप आठ राज्यों में कांग्रेस की पराजय हुई और गैर-कांग्रेसी शासन की स्थापना हुई इसके साथ ही कांग्रेस का प्रभुत्व समाप्त हो गया, जिसका केन्द्र और अधिकांश राज्यों में वर्चस्व था। तथापि इससे पार्टी के समर्थन आधार पूर्ण रूप से क्षण नहीं हुआ। कांग्रेस को अनेक अवसरों पर अनेक राज्यों और केन्द्र में समर्थन प्राप्त होता रहा। लेकिन 1960 के दशक में यह एक दल के वर्चस्व वाला दल नहीं रहा।

3.3.2 कांग्रेस प्रणाली का पतन और गैर-कांग्रेसी तत्वों के उदय (1967-1989)

1967 के चौथे आम चुनाव से अब तक भारतीय राजनीतिक व्यवस्था में एक परिवर्तन आया है। यह परिवर्तन लोकसभा चुनावों में कांग्रेस पार्टी के वर्चस्व के पतन तथा विभिन्न राज्यों में क्षेत्रीय दलों और नेताओं ने न केवल कांग्रेस के प्रभुत्व को चुनौती दी बल्कि वे विभिन्न क्षेत्रों और समूहों के हितों और आकांक्षाओं का भी प्रतिनिधित्व करते थे मजबूत चुनौती उन नेताओं और दलों की ओर से आई जिन्होंने कृषि समुदायों और पिछड़े वर्गों का प्रतिनिधित्व किया। उत्तर भारत, बिहार और उत्तर प्रदेश में बी.के.डी, बी.एल.डी,, या एल.डी. और समाजवादी दल कांग्रेस के विकल्प बनकर उभरे। उन्होंने कृषक समुदायों और पिछड़े वर्गों के मुद्दों को प्राथमिकता दी बिहार और उत्तर प्रदेश में पिदड़े वर्गों के लिए आरक्षण की शुरुआत तथा केन्द्रीय सरकार के संस्थानों में पिछड़े वर्गों के लिए आरक्षण लागू करने के लिए मंडल आयोग की स्थापना एजेंडा का उदाहरण था जो कांग्रेस के कार्यक्रम से भिन्न था। 1967-1989 के दौरान राज्यों में राजनीतिक निकाई। राजनैतिक प्रणाली मध्यप्रदेश, राजस्थान, हिमाचल प्रदेश और दिल्ली में प्रतियोगिता कांग्रेस और बी.जे./बीजेपी के बीच थी। केरल, त्रिपुरा और पश्चिमी बंगाल में कांग्रेस थी और प्रमुख प्रतियोगियों को छोड़ गई थी। पंजाब जम्मू और कश्मीर में कांग्रेस क्षेत्रीय दलों के नेतृत्व में आंध्रप्रदेश, असम और गोवा में गठबंधन हो गया। हालांकि भाजपा ने भी भारी मत हासिल किया। उत्तर-पूर्वी राज्यों में यह प्रतियोगिता मुख्य तथा कांग्रेस और विभिन्न क्षेत्रीय दलों या उनके गठबंधनों के बीच थी। तमिलनाडु में द्रमुक के द्रमुक और अकादमी की स्पर्धा की गई है। इसके अलावा 1969 में कांग्रेस में विभाजित होकर सार्वजनिक संस्थानों की विश्वसनीयता का क्षण हुआ। इन्दिरा गाँधी के शासन के दौरान 1974 में जयप्रकाश नारायण के नेतृत्व में छात्र आंदोलन और सन् 1975-1977 में आपातकाल लगने से कांग्रेस का पतन हो गया। पहली बार केन्द्र स्तर पर कांग्रेस को जनता पार्टी ने चुनौती दी थी। 1977 में हुए पांच दलों के आम चुनाव में कांग्रेस की हार हुई। इस चुनाव में कांग्रेस की हार को दलीय पद्धति में नये युग का अग्रदूत माना गया। बहरहाल, 1980 के दशक में जनता के ब्रान्ड के चरण में कांग्रेस की उन्नति हुई।

1984 में कांग्रेस की लोकप्रियता इंदिरा गाँधी के कत्ल के बाद हुए संसदीय चुनाव में चरम पर पहुँच गई। इस कांग्रेस की जीत के बाद राजीव गाँधी देश के प्रधानमंत्री बने।

लेकिन राजीव गांधी सरकार ने बहुत सी चुनौतियों का सामना किया। इन चुनौतियों में मंदिर निर्माण के लिए आंदोलन शामिल था। अयोध्या, पूर्व मंत्री के नेतृत्व में राजीव गांधी के नेतृत्व में आंदोलन में भ्रष्टाचार के खिलाफ पी. सिंह बोफोर्स से बंदूके खरीदना। चूंकि सरकार का नेतृत्व कांग्रेस नेता ने किया था। इसकी चुनौतियों का असर कांग्रेस पर पड़ा इसके अलावा कांग्रेस के कुछ परंपरागत सहयोगियों जैसे दलितों तथा कुछ कमजोर वर्गों ने हाल ही में गठित पार्टी बी.एस.पी (1984 में स्थापित) के साथ मिलकर काम किया। 1989 में कांग्रेस पार्टी का लोकसभा चुनाव खत्म हो गया और जनता के दल के नेतृत्व वाला गठबंधन को राष्ट्रीय मोर्चा गठित सरकार के नाम से जाना गया और वी. पी. सिंह प्रधानमंत्री बने। 1980 के दशक के अंत से कांग्रेस पार्टी विफल रही है। एक लोकप्रिय नेतृत्व उत्पन्न करने के लिए जो विभिन्न हितों को समायोजित करने और अपने प्रतिद्वंद्वियों के प्रति आक्रमण का शिकार करने में सक्षम है। बाद में दशकों में जबकि बी.पी. भारत की सबसे प्रभावशाली राजनैतिक पार्टी के रूप में उभर कर सामने आ रही थी। कांग्रेस दल को अपने प्रभाव को बनाए रखने के लिए सहयोगियों की आवश्यकता थी। भारत में गठबंधन सरकार बनाने की प्रक्रिया लंबी हो गई।

3.3.3 गठबंधन दलीय व्यवस्था का उदय

गठबंधन राजनीति में वृद्धि ने दलीय प्रणाली के बीच प्रतिद्वंद्विता को परिवर्तित कर दिया है। और वह प्रतिद्वंदिता राष्ट्रीय और राज्य पार्टियों के गठबंधन के बीच एक हो गई है। यद्यपि संयुक्त राज्य अमेरिका में और केन्द्र में क्रमशः 1969 और 1977 में एस.वी.डी. गठबंधन ओर जनता पार्टी के नेतृत्व में गठबंधन सरकार बनाई गयी थी लेकिन 1989 में ही भारत की राजनीति में गठबंधन राजनीति का स्वरूप बदल गया। राजनैतिक दलों ने पहले ही गठबंधन किया था। 1996 में गैर-भाजपा पार्टियों ने 13 राजनैतिक दलों ने संयुक्त मोर्चा के नाम से एक गठबंधन बना लिया था। इस गठबंधन में जनता दल, समाजवादी दल, द्रविड़ मुन्ने कझम, तेलंगण, असम गण परिषद और वामपंथी पार्टियों को सम्मिलित किया गया। संयुक्त मोर्चा ने एच. डी. देवगोड़ा 1996 में तथा इन्द्र कुमार गुजराल 1997-1998 में प्रधान मंत्री के रूप में केन्द्र में दो सरकारें चलायी। इसी प्रकार वर्ष 1999 में गठबंधन के सबसे बड़े दल के रूप में भाजपा ने राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन की सरकार बनाई। 1989, 1990, 1991, 1996, 1998, 1999, 2004, 2009 और 2014 में गठित सरकारों में कई दल शामिल थे। किंतु वर्ष 2004 से प्रमुख रूप से दो राजनैतिक दलों पर केंद्रित गठबंधन हुए जिन्होंने केन्द्र और राज्यों में सरकारों का गठन किया। एक समूह का नेतृत्व कांग्रेस द्वारा यू.पी.ए. के नाम से किया गया है दूसरे समूह का नेतृत्व बी.जे.पी. द्वारा किया गया जिसे राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) के नाम से जाना गया है। गठबंधन सरकार यू.पी.ए. ने मनमोहन सिंह में नेतृत्व में दो केन्द्र सरकारें बनाई 2004-2009 के दौरान तथा 2009-2014 के दौरान। एन.डी.ए. ने भी 2014 से 2019 एवं 2019 से अब तक दो बार नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में सरकार बनाई थी। कांग्रेस एवं बी.जे.पी. के अलावा भी अन्य प्रकार के गठबंधन बने थे। इस प्रकार का गठबंधन तीसरा मोर्चा के नाम से जाना जाता है। लेकिन तीसरा मोर्चा यू.पी.ए. एवं एन.डी.ए. की तरह कभी स्थायी नहीं रहा था। कुछ राज्यों जैसे असम, बिहार, एम.पी. नागालैण्ड और सिक्किम में भी गठबंधन की सरकारें बनी हैं।

3.4 भारतीय दलीय प्रणाली की सीमाएं

एक सुगठित संगठन, विचारधारा, आंतरिक लोकतंत्र, लोकतंत्रात्मक नेतृत्व और नीतियों तथा कार्यक्रम लोकतंत्र में राजनीति व्यवस्था की प्रमुख विशेषताएं है। भारत में अधिकांश राजनीतिक दल आम तौर पर इन मापदंडो को पूरा नहीं करते। हालांकि कुछ पार्टियों के संगठन होते है। लेकिन सभी तरह की पाटियाँ राष्ट्रीय राज्य या अपेक्षीकृत पार्टियों व्यक्तित्व के पीछे मिल-जुलकर रही है। राज्यों के अधिकांश दलों को उनके नेताओं द्वारा ज्ञात है कि उनकी नीतियों या राजनीतिक दलों के रूप में उनकी नीतियों या पार्टियों का आंतरिक लोकतंत्र का अभाव होता है। जिसमें निर्णय लोकतंत्री ढंग से नहीं लिए जाते या पार्टियों के भीतर व्यक्ति या व्यक्ति समूह बड़े-बड़े निर्णय लेते हैं। कुछ पार्टियों सभी के बनाये समाज के विशिष्ट वर्गों के हितों को उठाती हैं। भारत में नेहरू के बाद के युग में पार्टी की संरचना (ढ़ांचा) का कमजोर होना शुरू हुआ। गुटबाजी और आंतरिक प्रतिस्पर्द्धा के परिणाम स्वरूप भारत में पार्टियों के बीच फूट हुई और गुट बने। राजनीतिक दलों, अपराधियों कारपोटेट सेक्टर, और भ्रष्टाचार के बीच संबंध भारत में दलीय प्रणाली को सीमित बनाते है।

अभ्यास प्रश्न 2

नोटः क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए

ख) अपने उत्तर का मिलान इकाई के अंत में दिए गए उत्तर से करें।

1) भारत के संदर्भ में ''एक-दलीय प्रभुत्व बनाम बहु-दलीय प्रणाली से आप क्या समझते हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

2) गठबंधन सरकार क्या है?

.....

.....

.....

.....

.....

3.5 सारांश

भारतीय राजनैतिक प्रणाली ने तीनों प्रकार की पार्टी (दलीय) व्यवस्थाएं हैं। तथापि उनकी बुनियादी पारंपरिक अवधारणा से अलग हैं। भारत में एमदलीय प्रणाली थी पर एक दलीय पद्धति नहीं थी, कांग्रेस के वर्चस्व के पश्चात भारत में दोनों एक द्वि-दलीय प्रणाली और एक

बहु-दलीय प्रणाली हैं। बहुत से क्षेत्रीय दलो के उद्भव और आम चुनाव और विधान सभाओं के चुनावों में उनकी सक्रिय भागीदारी से राजनीतिक संस्थानों को अधिक लोकतांत्रिक बना दिया। साथ ही साथ बहुलवादी भी बना दिया गया है। अब, बहुत से उपेक्षित वर्गो, सामाजिक समूहों और अल्पसंख्यकों के अपने प्रतिनिधि और पार्टियां है जो उनकी रूचि को पूरा करती है। एक प्रकार से वह पार्टी व्यवस्था को अधिक पारदर्शी और समायोजित बना रही है परन्तु दूसरी ओर सरकार अस्थिर करती है। बहुत सी सीमाओं के बावजूद बहुदलीय व्यवस्था ने राजनीतिक संगठनों को और ज्यादा लोकतांत्रिक एवं समावेशी बना दिया है।

3.6 संदर्भ

अरोड़ा, बलबीर (2002), ''पोलोटिकल पार्टीज एंड पार्टी सिस्टमः द इंमरजैंस ऑफ न्यू कोमलिशन'', इन जोया हसन पार्टिज एन्ड पार्टी पालिटिक्स इन इंडिया, नई दिल्ली, ओ.यू.पी.

छिब्बर के. प्रदीप और राहुल वर्मा (2018), आइडोलोजी और आइडेंडिटी, द चेंजिंग पार्टी सिस्टम ऑफ इंडिया, ओ.यू.पी.

हसन, जोया, (2000), पोलिटिक्स एंड स्टेट इन इंडिया, नई-दिल्ली, ओ.यू.पी. प्रकाशन

कोठारी, रजनी (1961), पार्टी सिस्टम, द् इकोनोमिक वीकली, पी.पी. 847-854।

कोठारी, रजनी (1982), पोलिटिक्स ऑफ इंडिया, नई-दिल्ली, ओरियंट ब्लैक स्वान।

3.7 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

अभ्यास प्रश्न 1

1) दो दलीय प्रणाली वह प्रणाली है जिसमें अन्य दलों की उपस्थिति के बावजूद केवल दो दलों को पर्याप्त समर्थन प्राप्त है और इसमें अधीन सरकार बनाने की आशा है एक निश्चित समय पर निर्वाचित उम्मीदवारों में से अधिकांश किसी एक के सदस्य होते है जो सरकार बनाते है जबकि दूसरा पक्ष विपक्ष में ही रहता है बहुदलीय प्रणाली एक ऐसी प्रणाली है जिसमें दो से अधिक दल मौजूद होते हैं जो सत्ता के लिए संघर्ष करते है किंतु कोई भी दल अकेले शासन करने पर पूर्ण बहुमत प्राप्त नहीं कर सकता है भारत और कई यूरोपीय देशों के पास एक बहुआयामी प्रणाली है। बहु-दलीय प्रणाली में तीन, चार या इससे अधिक दल गठबंधन सरकार बनाने और शासन के लिए न्यूनतम साझा कार्यक्रम अपनाने के लिए एक जुट होते है क्योंकि उनमें किसी एक विचारधारा के प्रति वचनबद्धता नहीं है। संयुक्त राज्य अमेरिका और यूनाइटेड किगडेम दो दलीय प्रणाली के अच्छे उदाहरण है। भारत बहुदलीय व्यस्था में गठबंधन सरकारें बनाई जाती हैं जो न्यनतम साझा प्रोग्रेम अपनाती हैं।

अभ्यास प्रश्न 2

1) स्वतंत्रता के बाद से 1970 के दशक की संक्षिप्त अवधि को छोड़कर कांग्रेस ने भारत में बहुदलीय प्रणाली के साथ दलीय प्रणाली में प्रमुख स्थान प्राप्त किया था। यह प्रणाली एक पार्टी के प्रभुत्व बनाम बहुदलीय प्रणाली के रूप में प्रचलित है।

2) बहुदलीय प्रणाली में कई दल गठबंधन तथा न्यनतम साझा प्रोग्रम के आधार पर हम सरकार बनाने के लिए एकत्र होते है। 1990 के दशक से भारत ने कई गठबंधन

सरकारें देखी है। चुनाव में बहुमत प्राप्त करने के लिए कांग्रेस और भाजपा जैसे बड़े राष्ट्रीय दलों की विफलता से कई छोटे-2 दल सामने आए है। 1989, 1990, 1991, 1996, 1998, 1999, 2004, 2009 और 2014 में गठित सरकारें कई दलों के गठबंधन में रही। इसका लाभ यह है कि इस तरह ही सरकार किसी विचारधारा विशेष पर नहीं चलती लेकिन आम न्यूनतम कार्यक्रम में तो यह प्रणाली और अधिक लोकतांत्रिक बनाता है।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY